पद २२६

(राग: यमन जिल्हा – ताल: त्रिताल) रडे हा गोविंद राधे तुझ्या गृहा नेई गे।।ध्रु.।। करितसे गवळ्या

घरीं। दही दुधाची चोरी। खोड्या करी नानापरी। अंतचि नाहीं

गे।।१।। याची खोडी किती वानूं। खेळायासी मागे भानू। मुखांत घालितां स्तनु। न समजे कांहीं गे।।२।। उचलुनी कडिये घेई।

वालिता स्तनु । न समज काहा ग ।।२।। उचलुना काडय घइ। तुझ्या गृहाप्रति नेई। खाऊं घाली दूध दही। याला समजावी गे।।३।। उतरी यशोदा कडी। राधेवरी घाली उडी। माणिक प्रभुची गुणगोडी। निशिदिनि गाई गे।।४।।